- पृष्ठ 04
- Reg: UDYAM-BR-17-0007168



Email_dainikbiharpatrika@gmail.com

पटना। शनिवार, f 12 अक्टूबर f 2024

web_dainikbiharpatrika.com





ने मंदिरों में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बौंसी/बांका।शारदीय नवरात्र के महाअष्टमी तिथि को मां दुर्गा को डलिया चढ़ाने दुर्गा मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। बौंसी

नगर पंचयत अंतर्गत पुराणी हाट स्थित दुर्गा के पूजन दर्शन को लेकर जुटी श्रद्धालुओं वहीं विधि व्यवस्था को लेकर मंदिर के के साथ श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा को डलिया एवं प्रसाद चढ़ाया। वही महाअष्टमी तिथि को माँ

मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं का पहुंचना की भीड़ को व्यवस्थित ढंग से पूजा दर्शन आसपास पुलिस बल तैनात की गई थी। वही मंदिर में शुरू हो गया। जय माता दी के जयकारे कराने के लिए दुर्गा पूजा आयोजन समिति से मंदिर के बाहर परिसर में लगे मेले का बच्चों जुड़े सदस्य व स्थानीय युवा सक्रिय रहे। मंदिर 🛮 ने जमकर लुफ्त उठाया। इस दौरान बड़ी परिसर में महिला पुलिस बल भी तैनात रही। संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे।

पुलिस ने 2 व्यक्ति को विदेशी शराब के साथ किया गिरफ्तार



दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बांका:- बौंसी थानान्तर्गत भलजोर चेक पोस्ट के पास पुलिस ने 2 व्यक्ति को 02.250 ली विदेशी शराब के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मिली सूचना के आधार पे छापेमारी कर 2 व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान बांका जिला के रजौन प्रखंड के खिड्डी निवासी अशोक प्रसाद सिंह के पुत्र मनीष कुमार एवं मनोज मंडल के पुत्र रजा कुमार के रूप में हुई है। युवक को गिरफ्तार कर पुलिस आगे की कार्यवाही में जुटी है। छापेमारी प्र० स० अ०नि० विश्वजीत कुमार के नेतृत्व में की गयी। साथ ही शराब सेवन के आरोप में कु०-07 व्यविक्रयों को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय में पेश किया गया। जहाँ से वे जुर्माना देकर मुक्त किए गए।





बौंसी नगर पंचायत में साफ-सफाई का कार्य नियमित रूप से नहीं, लोगों को हो रही परेशानी

दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बौंसी/बांका | बौंसी नगर पंचायत की साफ- सफाई व्यवस्था राम भरोसे है। नगर पंचयात अब धीरे धीरे नरक पंचयात में तब्दील होता जा रहा है। हालांकि साफ- सफाई की जिम्मेदारी संवेदक को दी गई है, परन्तु लोगों का कहना है कि साफ-सफाई का कार्य नियमित रूप से नहीं किया जा रहा है जिस कारण जगह- जगह गंदगी का अम्बार लगा हुआ है और कचरे की दुगंध से लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पर रहा है। गंदगी के अम्बार के कारण लोगों को संक्रमण का भय भी सता रहा है। बौंसी के थाना कॉलोनी वार्ड नंबर 15 समीप रखा हुआ डस्टबिन करीब सप्ताह भर से साफ नहीं हो पाया है। जिससे दुर्गंध आ रहा है और संक्रमण फैलने का खतरा भी

बढ़ रहा है। नगर पंचायत के लोगों में इस बात को लेकर नाराजगी जाहिर है और उनका कहना है कि साफ-सफाई के फंड का पैसे आखिर कहां खर्च हो रहे हैं। ये सबसे बडा सवाल है। आपको बता दें की थाना कॉलोनी गली नंबर 1 में सफाई कर्मियों द्वारा सड़क का कूड़ा साफ कर एक ही जगह जमा कर दिया जाता है। जो की अभी भी वहीँ पड़ा हुआ है। इसका उठाव अभी तक नहीं किया गया है। नगरवासी नगर पंचयात की साफ़ सफाई को लेकर काफी परेसान हैं। इसका समाधान अति शीघ्र होना चाहिये। आपको बता दें की निकटतम पर्व दीपावली और लोक आस्था का महापर्व छट आने वाला है। ऐसे में अगर नगर पंचयात में साफ-सफाई नियमित रूप से नहीं होगी तो पर्व करने वाली महिलाओं सहित नगरवासियों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

प्रेम प्रसंग में छात्रा ने की आत्महत्या, बांका में रहकर ढाई साल से कर रही थी पढ़ाई

दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

हाउस के पास शिवलाल हसदा के मकान के मिलते ही बांका टाउन थाना के अवर निरीक्षक नाज़नीन रफ़ी दल-बल के साथ मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल बांका भेज दिया। मृतक छात्रा की पहचान टाउन थाना अंतर्गत शंकरपुर निवासी पप्पू यादव के 24 वर्षीय पुत्री रानी कुमारी के रूप में हुई है। मृतक छात्रा के नाना कटोरिया थाना क्षेत्र के जेसरी निवासी पैरो यादव ने बताया कि नातिन रानी कुमारी रहकर पढ़ाई कर रही थी।

भागलपुर घोघा निवासी एक लड़के से काफी बात किया करती थी। जब मैंने पूछा कि किस बांका | बांका टाउन थाना अंतर्गत सर्किट से इतना बात करती हो, तो बताया कि नाना सहेली से बात करती हूं। उसी लड़के से कुछ दूसरे तल्ले पर शुक्रवार सुबह 9:00 बजे एक दिन पहले टेंशन हुआ था, जो बात उसकी नानी छात्रा ने आत्महत्या कर लिया। जानकारी ने मुझे बताई थी। इन्हीं कारणों से गुरुवार को 3:00 बजे नानी को ₹8000 देकर शंकरपुर घर भेज दिया। बोला मैं बाद में आऊंगी, पता नहीं था उसका यही इरादा था। शुक्रवार को 9:00 बजे उसकी आत्महत्या कर लेने की खबर मिली। लड़की के पिता शंकरपुर निवासी पप्पू यादव प्रदेश में रहकर मजदूरी करता है। मृतिका रानी कुमारी दो भाई एक बहन में सबसे बड़ी थी और ढाई साल से बांका में

रतन टाटा जी की मृत्यु से सारी दुनिया के लोगों में दुख: संजीव कुमार लालू शर्मा

दैनिक बिहार पत्रिका/भागलपुर

आज दुनिया के पूरे व्यवसायिक जगत के साथ-साथ तमाम क्षेत्रों के अग्रणी रतन को खो दिया है,रतन टाटा जी की मृत्यु से सारी दुनिया के लोगों में दुख है,यह हम सभी लोग महसूस करते हैं!हम भागलपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्य भारत के आदरणीय ऊर्जावान प्रधानमंत्री भाई नरेंद्र मोदी जी से विशेष अनुरोध करते हैं कि स्वर्गीय रतन टाटा जी के नाम से एक जोड़ी स्पेशल ट्रेन चलाई जाए, ताकि आने वाली सदियों तक उनके नाम की पहचान दुनिया देखती रहे! हम भागलपुर चेंबर के तमाम सदस्य उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं:- संजीव कुमार लालू शर्मा अध्यक्ष भागलपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स



शिवांश का मनाया गया तीसरा जन्मदिन

दैनिक बिहार पत्रिका/खगडिया

दैनिक बिहार पत्रिका के संपादक कृष्णा टेकरीवाल के प्रथम सुपुत्र शिवांश टेकरीवाल का जन्मदिन शुक्रवार को उनके आवास पर धुमधाम से मनाया गया। वही मौके पर शिवांश के दादाजी नंदिकशोर टेकरीवाल, दादी जी संतोष देवी,चाचा कन्हैया टेकरीवाल, पिता कृष्णा टेकरीवाल, माता सिमरन टेकरीवाल,बुआ मिनाक्षी अग्रवाल एवं बुआ का बेटा वंश अग्रवाल मौजूद रहे।



फुटानी बाजार पर हर साल विशेष तरह का शुरू हो जाता है। प्रतिदिन लगभग बीस

दैनिक बिहार पत्रिका/छपरा

जलालपुर प्रखंड के फुटानी बाजार पर इस बार दो विशालकाय डायनासोर के मध्य स्थापित पहाड़ों वाली मां दुर्गा के दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ रही है। यहां के मुख्य द्वार पर दो विशालकाय डायनासोर बनाए गए हैं। पूजा पंडाल के मुख्य द्वार पर स्थापित इन विशालकाय डायनासोर से गुजरने के बाद पहाड़ में स्थापित मां दुर्गा भक्तों को दर्शन दे रही है । यहां प्रतिवर्ष विशालकाय पंडाल का निर्माण किया जाता है। पिछले साल यहां विशाल एनाकोंडा बनाया गया था जो भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा। बहुत कम समय में जिले में अपनी विशेष पहचान बना लेने वाले

बाहर के श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बनता है। इससे पहले यहां यहां विशाल शंकर जी की हृदयस्थली में व मगरमच्छ के हृदयस्थली में मां दुर्गे को स्थापित किया जा चुका है। कोविड काल में कोरोना से बचने के लिए यहां भव्य पंडाल का निर्माण किया जा चुका है। प्रति वर्ष यहां बनने वाले विशेष पंडाल का निर्माण मांझी के धनी छपरा गांव के कलाकार ओमप्रकाश चौधरी व

पंडाल का निर्माण कार्य तीन महीने पहले से

पंडाल बनाया जाता है जो जिले व जिले से मजदूर दिन रात काम करते हैं। पूजा सिमिति के सदस्यों ने बताया कि पंडाल के निर्माण में काफी मात्रा में बांस बल्ला, जूट के चट, पुआल, कपड़े व अन्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण व वन्य जीवों के संरक्षण पर रहता है विशेष जोर फुटानी बाजार पर बनने वाले भव्य पंडाल निर्माण में वन्य जीवों की सुरक्षा,वन व पर्वतीय इलाकों के संरक्षण पर विशेष जोर दिया जाता है। इससे पहले विशाल किंग कांग, शेर सहित अन्य वन्य जीवों सहयोगी कलाकार पंकज चौधरी व प्रेमसागर के संरक्षण के लिए मुख्य द्वार के बाद गुफा का निर्माण किया गया था।

फुटानी बाजार पर हर साल बनने वाले भव्य इस बार डायनासोर के संरक्षण पर बल दिया गया है।

युवा क्रांति रोटी बैंक के छठे वर्षगांठ पर 51 माताओं को किया गया सम्मानित



दैनिक बिहार पत्रिका/छपरा

युवा क्रांति रोटी बैंक का छठा वार्षिकोत्सव धूमधाम से शहर के चंद्रावती पैलेस में मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि मधु मंजरी, मोनालिसा सिंह, पूर्व मेयर राखी गुप्ता,डिप्टी मेयर रागिनी गुप्ता,अध्यक्ष नीतू गुप्ता,उपाध्यक्ष बिंदिया जयसवाल,सुषमा सोनी,अनुराधा मिश्रा, चेतना सिंह,आशा सिंह, प्रियंका प्रकाश, सरिता प्रकाश, पूजा गुप्ता, सुदीपा ब्याहुत,अर्चना कुमारी, बिंदु कुमारी, ज्योति गुप्ता, रश्मि कुमारी, कुंती देवी, सीमा जयसवाल, रेणु सिंह, मिलन गुप्ता, संस्थापक ई०विजय राज ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंच संचालन एंकर मीली कुमारी ने किया।संस्थापक ई. विजय राज ने रक्तवीरों जयप्रकाश सिंह और

सचिन सिंह को सम्मानित किया। अध्यक्ष नीत् के दिनों में कंबल वितरण करना, बरसात के गुप्ता और बिंदिया जयसवाल ने कहा कि यह सभी कार्य आप सभी लोगों के सहयोग से हो पाते हैं।इस कार्यक्रम में आये हुए सभी अतिथियों का हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूं।मुख्य अतिथि का स्वागत चुनरी व स्मृति चिन्ह देकर किया गया। राखी गुप्ता ने कहा कि छपरा शहर में पिछले छ: सालों से युवा क्रांति रोटी बैंक हर शाम जरूरतमंदों के नाम से छपरा जंक्शन परिसर व विभिन्न जगहों पर असहाय एवं जरूरतमंद लोगों को भोजन कराती है साथ-साथ अगर किसी को रक्त की आवश्यकता पड़ती है तो युवा क्रांति रोटी बैंक आगे बढ़ कर उनकी मदद करती है। मीडिया प्रभारी अर्जुन सिंह और राशिद रिज़वी ने कहा कि हर त्योहार पर सफाई कर्मी महिलाओं के बीच साड़ी वितरण करना,जाड़े सर्वजीत रॉय, पिंटू, अभिषेक उपस्थित रहे।

दिनों में रेनकोट वितरण किया जाता है और आगे ऐसे ही मुहिम चलता रहेगा। मालूम हो कि पिछले छह सालों से अब तक युवा क्रांति रोटी बैंक ने बहुत सारे सामाजिक कार्य किए हैं। जिसमें प्राकृतिक आपदा के समय सारण में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भोजन का वितरण,राहत सामग्री का वितरण,जंगल प्लानेट के तहत शहर के सार्वजनिक स्थलों पर हजारों पेड़ लगवाना और उसकी देखभाल करना,पर्यावरण संरक्षण को लेकर शहर में सार्वजनिक पोखरे की सफाई कराना जैसे कार्य प्रमुख है । इस कार्यक्रम में संरक्षक सुषमा सोनी,आशा सिंह, युवा क्रांति रोटी बैंक उपाध्यक्ष अरुण कुमार, अमरेश कुमार,आदर्श राज, बवाली सिंह, निशांत, अनंत श्रीवास्तव, मंजीत कुमार,







भागवत कथा में कथावाचिका ने सुनाई श्री कृष्ण की बाल लीला,श्रद्धालु बाल लीला सुन हुए मंत्रमुग्ध

दैनिक बिहार पत्रिका/ कुमार चंदन

बौंसी/बांका | बौंसी नगर पंचायत के पुरानी हाट स्थित दुर्गा मंदिर में भागवत कथा का आयोजन के छट्टे दिन शुक्रवार को वृन्दावन से आई कथा वाचिका साध्वी कृष्णा किशोरी जी के द्वारा श्रीकृष्ण बाल लीला, कालियामसन मर्दन तथा गोवर्धन पूजा का सुंदर चित्रण किया गया। कथा में उन्होंने कहा की हिंदू धर्म में श्रीमद्भागवत पढऩे व सुनने का विशेष महत्व है। श्रीकृष्ण की बाल लीला, माखन चोरी तथा गोवर्धन पूजा की

कथा श्रद्धालुओं को सुनाई। उन्होंने कहा कि साथ गोवर्धन पर्वत पर गए थे। वहां पर कृष्ण की यह बात मानी गई और व्रज में प्रेरणादायक हैं। भगवान कृष्ण ने बचपन में गाने के साथ उत्सव मना रही थीं। कृष्ण के अनेक लीलाएं की।

बाल कृष्ण सभी का मन मोह लिया करते थे। नटखट स्वभाव के चलते यशोदा मां के पास उनकी हर रोज शिकायत आती थी। मां उन्हें कहती थी कि प्रतिदिन तुम माखन चुरा के खाया करते हो, तो वह तुरंत मुंह खोलकर मां को दिखा दिया करते थे कि मैंने माखन नहीं खाया। कथावाचिका ने कहा कि भगवान कृष्ण अपनी सखाओं और गोप-ग्वालों के

भगवान की लीलाएं मानव जीवन के लिए गोपिकाएं 56 प्रकार का भोजन रखकर नाच पूछने पर उन्होंने बताया कि आज के ही दिन देवों के स्वामी इंद्र का पूजन होता है। इसे इंद्रोज यज्ञ कहते हैं। इससे प्रसन्न होकर इंद्र व्रज में वर्षा करते हैं, जिससे प्रचुर अन्न पैदा होता है। भगवान कृष्ण ने कहा कि इंद्र में क्या शक्ति है। उनसे अधिक शक्तिशाली तो हमारा गोवर्धन पर्वत है। इसके कारण ही वर्षा होती है, अतः हमें इंद्र से बलवान गोवर्धन की पूजा करनी चाहिए। बहुत विवाद के बाद श्री

गोवर्धन पूजा की तैयारियां शुरू हो गईं। इस दौरान श्रद्धालु भक्ति के सागर में मंत्रमुग्ध दिखे। वहीं भागवत कथा एवं भजनों की प्रस्तुति पर श्रोता मंत्रमुग्ध हुए। इस अवसर पर यजमान बने शिव कुमार साह पत्नी के साथ मौजुद थे। जबकि आयोजन को सफल बनाने में आयोजन समिति के अध्यक्ष राजीव कुमार सिंह उर्फ़ राजू सिंह, सुजीत कुमार झा, प्रदीप घोष, सौरभ चौधरी, बंटी कुमार केशव कुमार, रोनू सिंह, किशोर कुमार,रवि कुमार सहित अन्य लगे हुऐ हैं।

शारदीय नवरात्र के नवमें दिन मां सिद्धिदात्री की कि गई पूजा अर्चना



दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बौंसी/बांका। बौसी प्रखंड क्षेत्र में शारदीय नवरात्र के नवमें दिन शुक्रवार को मां सिद्धिदात्री की पूजा अर्चना की गयी। आपको बता दें की शारदीय नवरात्र में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा अर्चना की जाती है। लगातार वैदिक मंत्रोचारण के साथ पूरा प्रखंड क्षेत्र गुंजायमान हो रहा है। हिंदू मान्यता के अनुसार, नवमी तिथि का विशेष महत्व है।

' स्थान आपका , काम हमारा "

9431609795

www.jaimatadicaterers.com

LALU SHARMA

क्योंकि इस दिन कन्या पूजन के साथ मां सिद्धिदात्री की पूजा अर्चना की जाती है। मान्यता है मां सिद्धिदात्री की आराधना करने से सिद्धियों की प्राप्ति होती है। साथ ही अगर माता के स्वरूप की बात करें तो इनकी दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में कमल पुष्प और ऊपर वाले में शंख है।

वहीं बाएं तरफ के नीचे वाले हाथ में गदा और ऊपर वाले हाथ में चक्र है। भगवान शंकर ने कृपा से ही शिवजी का आधा शरीर देवी का भी इन्हीं की कृपा से सिद्धियों को प्राप्त किया



ही नहीं बल्कि सिद्ध, गंधर्व, यक्ष, देवता और स्मरण हमें इस संसार की असारता का बोध असुर सभी इनकी आराधना करते हैं। संसार में सभी वस्तुओं को सहज और सुलभता से प्राप्त करने के लिए नवरात्र के नवें दिन इनकी पूजा की जाती है।

भगवान शिव ने भी सिद्धिदात्री देवी की कृपा से तमाम सिद्धियां प्राप्त की थीं। इस देवी की हुआ था। इसी कारण शिव अर्द्धनारीश्वर नाम

💃 आर्डर सिर्फ 20 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक ही लिया जायेगा

सभी सामग्री केवल पूर्व आर्डर पर ही उपलब्ध होगी।

🅦 डिलीवरी 30 अक्टूबर तक दी जायेगी। होम डिलेवरी एक्स्ट्रा चार्ज पर उपलब्ध है।

कराते हैं और अमृत पद की ओर ले जाते हैं। मुख्य रूप से बौंसी पुरानी हॉट स्थित दुर्गा मंदिर, कुड़रो दुर्गा मंदिर, गोकुला दुर्गा मंदिर, चांदन डैम स्थित वैष्णवी दुर्गा मंदिर, श्याम बाजार दुर्गा मंदिर, सिकंदरपुर दुर्गा मंदिर, गोलहट्टी दुर्गा मंदिर, भंडारीचक दुर्गा मंदिर सहित अन्य मंदिरों में मां महागौरि की पूजा अर्चना की गई।

No. 1

मुक्तेश्वर महादेव मंदिर के बगल में , लक्षी बाबू का बगीचा (लास्ट गल्ली),

न्त्लेक्स सिनेमा के पीछे , खरमनचक , खलीफावाग , ही न सिंह रोड, भागलपुर

शिक्षक के आश्रितों को 25 लाख की सहायता राशि देने की संघ ने की मांग

दैनिक बिहार पत्रिका/छपरा

रिविलगंज प्रखण्ड के खैरवार उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत मकेर प्रखण्ड के खलपुरा निवासी शमशाद अंसारी का निधन हृदयगति रुकने से गुरुवार को गया। जिनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए परिवर्तनकारी प्रारंभिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष शिक्षक नेता समरेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि शमशाद जी का निधन अपूरणीय क्षति है , स्थानीय साथियों से प्राप्त जानकारी अनुसार पिछले कुछ महीनों से वे बेहद तनाव में रहते है। वे अपने पीछे तीन बेटी तथा एक बेटा को छोड़कर गए है।जिनकी अब सारी जिम्मेदारी घर वालों पर है।उन्होंने कहा

कि समय से पूर्व इस तरह काल के गाल में समा रहे शिक्षको की मौत का जिम्मेदार आखिर कौन है जो आये दिन सड़क दुर्घटना,नाव दुर्घटना जैसे हादसो का शिकार होते है। शिक्षक नेता ने शिक्षा विभाग से अविलंब मृत शिक्षक के आश्रितों को 25 लाख रुपये की सहायता राशि की घोषणा करने की मांग की । उक्त मौके पर निजाम अहमद, मुमताज जी, साबिर जी, अनिल दास, इंद्रजीत कुमार महतो, निरंजन कुमार सिंह, संतोष जी,राजेंद्र प्रसाद,प्रवीण जी, निरंजन जी,कमर जावेद,पीयूष तिवारी,अविनाश सिंह,हिमांशु कुमार सिंह सहित अन्य शिक्षक उपस्थित थे।

पिकअप के पहिए से कुचलकर एक बच्चे की मौत: सड़क जाम



दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बांका:- कटोरिया सुईया मुख्य मार्ग पर कटोरिया थाना क्षेत्र के दुल्लीसार के पास दर्दनाक सड़क हादसे में एक 4 वर्षीय बच्चे की मौत हो गई। घटना बुधवार सुबह करीब 10 बजे की बताई जा रही है। घटना एक पिकअप वाहन के पहिए के नीचे बच्चे के कुचले जाने से घटी। मृतक दुल्लीसार गांव के ही बुधन पुझार का पुत्र पीयूष कुमार बताया गया है। कटोरिया पुलिस द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बांका भेज दिया है। जानकारी के अनुसार उक्त बच्चा अपने घर के पास स्थित मुख्य सड़क को पार करने की कोशिश कर रहा था। इसी दौरान सुईया की ओर से तेज रफ्तार के नीचे आ जाने से बच्चे की मौके पर ही कोहराम मचा हुआ है।

दर्दनाक मौत हो गई। इधर दुर्घटना के बाद ग्रामीणों ने मुख्य मार्ग को जाम कर दिया। जिससे एक घंटे तक सड़क के दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई। घटना की सूचना पर कटोरिया थानाध्यक्ष अरविंद कुमार के निर्देश पर अनि सुभाष पासवान सदलबल घटनास्थल पर पहुंचे तथा काफी समझा बुझाकर जाम को हटवाया गया। वहीं मामले की छानबीन कर शव को कब्जे में लेकर अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर द्वारा मृत होने की पुष्टि करने के बाद पुलिस द्वारा आवश्यक कागजी कार्रवाई पूरी की गई। इधर, दुर्घटना के बाद मौके से दुर्घटनाग्रस्त वाहन चालक मौके से गाड़ी को छोड़कर फरार हो गया। पुलिस द्वारा गाड़ी को जब्त कर मामले में में आ रही एक पिकअप ने अनियंत्रित होकर आगे की क़ानूनी कार्रवाई की जा रही है। बच्चे के ऊपर गाड़ी चढ़ा दिया। जिसके पहिए फिलहाल इस घटना से मृतक के परिजनों में

विजयदशमी की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति की शुभकामनाएं

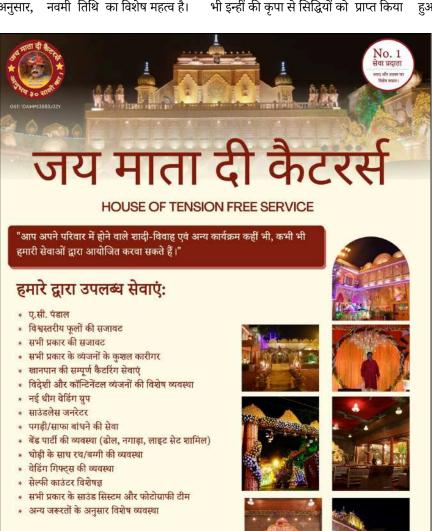
दैनिक बिहार पत्रिका। डेस्क

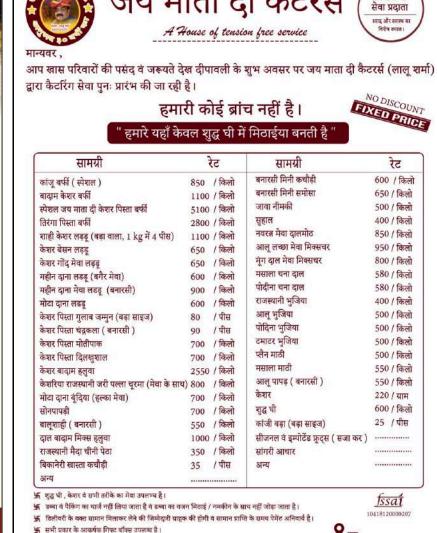
राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने विजयदशमी की संध्या पर देशवासियों को अपनी शुभकामनाएं दी हैं। राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा है, "विजयदशमी के पावन अवसर पर मैं अपने सभी नागरिकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूं।

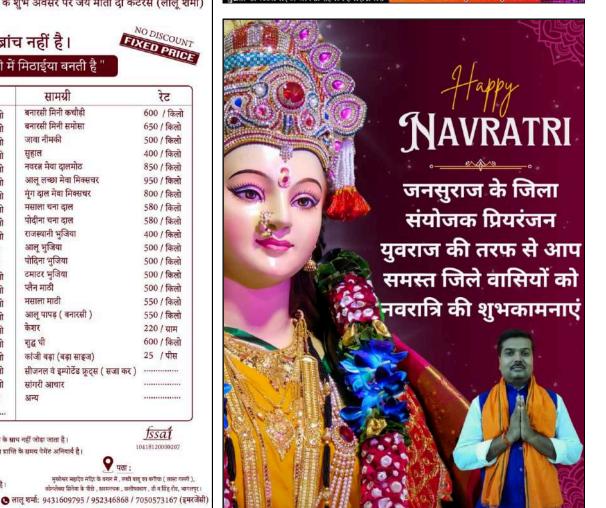
विजयदशमी का त्योहार अन्याय पर न्याय की

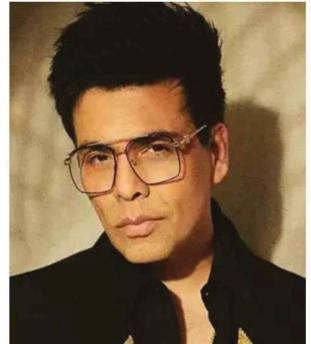
जीत का प्रतीक है। इस अवसर पर हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में

धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ आयोजित किये जाते हैं। यह पवित्र त्योहार हमें उच्च मानवीय आदर्शों में अपनी आस्था को और मजबूत करने की याद दिलाता है। इस त्योहार के साथ गरिमा, कर्तव्य के प्रति जिम्मेदारी, आचरण की शुद्धता, विनम्रता और न्याय के लिए साहसी संघर्ष की कई प्रेरक कहानियां जुड़ी हुई हैं। ये कहानियां हमारी प्रेरणा का स्रोत होनी चाहिए।आस्था और उत्साह का यह त्योहार सभी के लिए सफलता, समृद्धि और खुशी लाए।







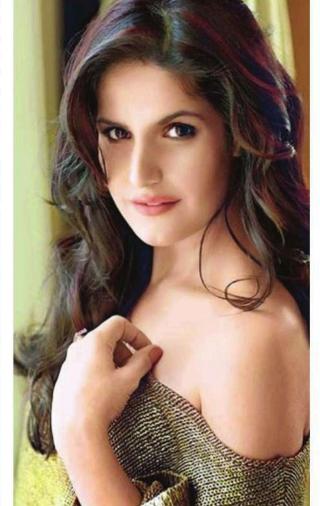


करण के शो द ट्रेटर्स को लेकर आ रही कई तरह की खबरें

मशहूर डायरेक्टर करण जौहर के अपकिमंग शो द ट्रेटर्स को लेकर रोजाना कई तरह की खबरें आ रही हैं। पहले शो के एलिमिनेशन से जुड़ी खबरें आईं, और अब खबर है कि शो का विनर अनाउंस हो गया है। जानकारी के मुताबिक, उर्फी जावेद ने द ट्रेटर्स जीत लिया है। हालांकि, अभी इस बारे में आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है और अधिक जानकारी का इंतजार है। द ट्रेटर्स का कॉन्सेस्ट पूरी तरह गेम प्ले पर आधारित है, जिसमें कंटेस्टेंट्स के निजी जीवन पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। शो की शूटिंग राजस्थान के जैसलमेर में 12 दिनों तक की गई है। इस शो को करण जौहर होस्ट करेंगे, और इसमें कई जाने – माने चेहरे नजर आएंगे, जिनमें करण कुंद्रा, उर्फी जावेद, राज कुंद्रा, जन्नत जुबैर, महीप कपूर, सुधांशु पांडे, मुकेश छाबड़ा जैसे सेलेब्रिटी शामिल हैं। शो में पहले राज कुंद्रा और फिर करण कुंद्रा के एलिमिनेट होने की खबरें भी सामने आई थीं। यह शो जल्द ही अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होने वाला है। उर्फी जावेद की जीत ने शो के दर्शकों में और भी उत्सुकता बढ़ा दी है। उर्फी जावेद की बात करें तो वह एक सोशल मीडिया इन्पलुएंसर और एक्ट्रेस हैं, जो अपने बोल्ड फैशन सेंस और विवादित बयानों के कारण सुर्खियों

एक्ट्रेस <mark>ज़रीन</mark> ने की सीटीआरएल की प्रशंसा

बालीवुड एक्ट्रेस ज़रीन खान ने फ़िल्म के बारे में अपने विचार अपने सोशल मीडिया हैंडल पर साझा किए। एक्ट्रेस ने कहा सीटी आरएल इज टूली ग्राउंडब्रेकिंग!काँग्रेट्स टू मोटवायने फ़ॉर येट अगेन मेकिंग ए फ़ेल्म दैट इज क्लोज टू होम.इट शेक्स यू फॉम विदइन, मेक्स यू थिंक. अनन्या पांडे, यू आर टू गुड. वन ऑफ योर बेस्ट्स फ़ॉर श्योर. इससे पहले, अनुराग कश्यप, सामंथा रूथ प्रभु और जैसे कई सेलिब्रिटीज ने फिल्म पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए अपने-अपने सोशल मीडिया हैंडल का सहारा लिया। यह पहली बार नहीं है, जब ज़रीन ने अपने इंडस्ट्री के लोगों के काम की सराहना की है। अपने सोशल मीडिया पर एविटव रहने वाली एक्ट्रेस ने अपने फैंस और फॉलोवर्स के साथ अपने एक्सप्रेशन और राय साझा करने में कभी संकोच नहीं किया। खान फिलहाल अपने फिटनेस वीडियो के लिए सुर्खियों में हैं, जिसने उनकी सिल्वर स्ऋीन वापसी को लेकर उत्साह बढ़ा दिया है। हाल ही में, आस्क मी एनीथिंग सेशन के दौरान, एक्ट्रेस ने वादा किया था कि उनके दर्शक उन्हें जल्द ही स्ऋीन पर देख पाएंगे । अभिनेत्री ने कथित तौर पर कुछ दिलचस्प प्रोजेक्ट साइन किए हैं, जिनकी घोषणा वह जल्द ही करेंगी। बता दें कि ज़रीन खान उन मशहूर हस्तियों की लिस्ट में शामिल हो गई हैं, जो विक्रमादित्य मोटवानी के लेटेस्ट प्रोजेक्ट सीटीआरएल की प्रशंसा कर रहे हैं।





दर्शक के रूप में हम बहुत नकारात्मक हो गएः जूनियर एनटीआर

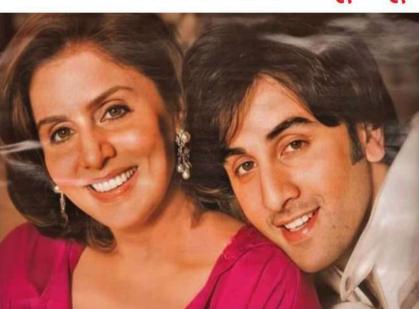
जूनियर एनटीआर और जाह्नवी कपूर की फिल्म देवरा ने अब तक दुनिया भर में 466 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है, इसके बावजुद फिल्म को उम्मीद के अनुसार रिस्पांस नहीं मिल पाया है। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान, जूनियर एनटीआर ने फिल्म के खराब प्रदर्शन पर खुलकर बात की । उन्होंने फिल्म की असफलता का दोष दर्शकों पर मढ़ते हुए कहा, हम एक दर्शक के रूप में इन दिनों बहुत नकारात्मक हो गए हैं। हम अब एक अच्छे तरीके से फिल्म का आनंद नहीं ले पा रहे हैं। जब मैं अपने बेटों को देखता हूं, तो उन्हें इस बात की परवाह नहीं होती कि वे किस एक्टर या किस फिल्म को देख रहे हैं। वे सिर्फ फिल्मों का आनंद लेते हैं। उन्होंने आगे कहा, मुझे हैरानी होती है कि हम अब बच्चों की तरह क्यों नहीं हो सकते ? आज हम हर फिल्म का विश्लेषण कर रहे हैं, निर्णय ले रहे हैं और बहुत ज्यादा सोच–विचार कर रहे हैं।शायद सिनेमा के प्रति हमारा जुड़ाव हमें ऐसा बना रहा है । देवरा का निर्देशन कोरटाला शिवा ने किया है, जिसमें जूनियर एनटीआर, सैफ अली खान और जाह्नवी कपूर प्रमुख भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म ब्लॉकबस्टर आरआरआर के दो साल बाद जूनियर एनटीआर की वापसी को चिह्नित करती है, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इसका प्रदर्शन उम्मीदों से कमतर रहा है। बता दें कि फिल्म देवरा हाल ही में रिलीज हुई थी, जिसने शुरु आती दिनों में दमदार कमाई की और समीक्षकों से मिली-जुली प्रतिक्रियाएं प्राप्त कीं।हालांकि, अब फिल्म का ऋेज दर्शकों के बीच धीमा होता नजर आ रहा है।

सुहाना सभी लोगों के साथ बेहद अच्छे से पेश आती हैं: वेदांग रैना

फिल्म ' जिगरा' के प्रमोशन के दौरान अभिनेता वेदांग रैना ने अपने पुराने को – स्टार्स सुहाना खान और खुशी कपूर के बारे में कुछ रोचक बातें साझा कीं। फिल्म के प्रमोशनल इवेंट के दौरान वेदांग एक सवाल के जवाब में वेदांग ने कहा कि सुहाना खान अपने आस – पास के सभी लोगों के साथ बेहद अच्छे से पेश आती हैं, और यह उनकी सबसे प्यारी आदत है। उन्होंने कहा कि सेट पर सुहाना हमेशा विनम्र और मददगार रही हैं, जिससे काम का माहौल और बेहतर हो जाता था। हालांकि सहाना की एक आदत वेदांग को थोड़ी नापसंद है, और वह है उनका मेक अप में बहत समय लगाना। वेदांग ने मजािक या



फैबुलस लाइव्स ऑफ बॉलीवुड वाइव्स में नजर आएंगे रणबीर और नीतू कपूर

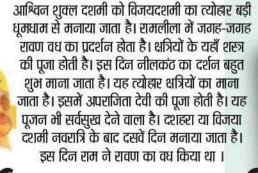


इस शो की पहली सीजन में नीलम कोठारी, महीप कपूर, भावना पांडे और सीमा किरण सजदेह की निजी और पेशेवर जिंदगी दिखाई गई थी। दूसरा सीजन सितंबर 2022 में आया था, जिसमें उनके पतियों को भी शामिल किया गया। इस नए सीजन में चंकी पांडे, समीर सोनी और संजय कपूर जैसे सितारे भी शामिल होंगे। ट्रेलर में दिखाया गया है कि दर्शकों को ढेर सारा हंगामा, ड्रामा, और ग्लैमर देखने को मिलेगा, जब मुंबई की वाइव्स और दिली की सोशलाइट्स के बीच शानदार टकराव होगा। ट्रेलर में नीतू और रिद्धिमा के बीच एक भावनात्मक बातचीत भी दिखती है, जिसमें वे अपने दिवंगत पिता ऋषि कपूर के निधन के बाद की जिंदगी पर चर्चा कर रही हैं। नीतू कहती हैं, पापा के बाद, रिद्धिमा, मैं कांपने लगी थी। रिद्धिमा जवाब में कहती हैं, हम अपनी भावनाएं जाहिर नहीं करते, लेकिन अंदर से हम अब भी दुखी हैं।यह नया सीजन रिद्धिमा के लिए एक विशेष अवसर है, जहां वह अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को साझा करेंगी।

बालीवुड एक्टर स्वर्गीय ऋषि कपूर की पुत्री रिद्धिमा कपूर नेटिफ्लक्स के पॉपुलर शो फैबुलस लाइब्स ऑफ बॉलीवुड वाइब्स में पहली बार अपने जीवन को सार्वजनिक करने जा रही हैं। सुपरस्टार रणबीर कपूर और उनकी मां, दिग्गज अभिनेत्री नीतू कपूर, जल्द ही अपनी बहन रिद्धिमा कपूर को समर्थन देते हुए नजर आएंगे।

आएंगे। शो का ट्रेलर रिलीज किया गया, जो इस बार की प्रतिस्पर्धा में ओरिजिनल बॉलीवुड वाइट्स और तीन नए चेहरों—शालिनी पासी, कल्याणी साहा और रिद्धिमा के बीच होने वाली है। ट्रेलर में एक दिलचस्प टकराव को दर्शाया गया है, जिसमें मुंबई से दिल्ली का मुकाबला देखने को मिलेगा। ट्रेलर के कैष्शन में लिखा गया है- मुंबई से दिल्ली का जबरदस्त टकराव, आ रहा है 18 अक्टूबर को, सिर्फ नेटिपलिक्स पर! ट्रेलर में रणबीर कपूर भी कुछ क्षणों के लिए दिखाई देते हैं, जहां वे मजाक करते हैं कि उनकी बहन रिद्धिमा शो को पूरी तरह से गड़बड़ कर देगी।





बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व

हैं. जिसे काछिन गादि कहते हैं। यह कन्या एक

अनुसूचित जाति की है, जिससे बस्तर के राजपरिवार

के व्यक्ति अनुमति लेते हैं। यह समारोह लगभग 15वीं

शताब्दी से शुरु हुआ था। इसके बाद जोगी-बिटाई होती



दशहरा (विजयदशमी या आयुध-पूजा) हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिये इस दशमी को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं, शस्त्र-पूजा की जाती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों - काम, ऋोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

रामलीला मंचन

दशहरा अथवा विजयदशमी राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। देश के कोने-कोने में यह विभिन्न रूपों से मनाया जाता है, बित्क यह उतने ही जोश और उल्लास से दूसरे देशों में भी मनाया जाता जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुलू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहाँ भी दस दिन अथवा एक सप्ताह

है, इसके बाद भीतर रैनी (विजयदशमी) और बाहर रैनी (रथ–यात्रा) और अंत में मुरिया दरबार होता है। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है। बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों,ओडिआ,और आसाम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरे बंगाल में पांच दिनों के लिए मनाया जाता है।ओडिशा और असम में 4 दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बाँसुरी आदि-आदि जिसके पास जो वाद्य होता है, उसे बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। त्योहार के दौरान शहर में छोटे मोटे स्टाल भी हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी मिठाईयों से भरे रहते हैं। यहां षष्टी के दिन दुर्गा देवी का में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य बोधन, आमंत्रण एवं प्राण प्रतिष्ठा आदि का आयोजन देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में किया जाता है। उसके उपरांत सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस के दिन प्रातः और सायंकाल दुर्गा की पूजा में व्यतीत बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा होते हैं ।अष्टमी के दिन महापूजा और बलि भि दि जाति करते हैं और कुलू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना है। दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं, जिसे इस उत्सव की शोभा निराली होती है। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारंपरिक मिटाई और चढ़ाती हैं, व देवी को अश्रुप्रित विदाई देती हैं। इसके उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं, व सिंदूर से आयोजन होते हैं, व मैदानों में मेले लगते हैं। खेलते हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर ही शुभ माना जाता है। तदनंतर देवी प्रतिमाओं को विजय ना मानकर, लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना बड़े-बड़े ट्रकों में भर कर विसर्जन के लिए ले जाया को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर जाता है। विसर्जन की यह यात्रा भी बड़ी शोभनीय और

पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है।

स्त्रियाँ और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से

सज्जित होकर तुरही, बिगुल, ढोल, नगाड़े,

अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं, जो दुर्गा का ही

रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहां

दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की

शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। प्रथम दिन जिसे काछिन

गादि कहते हैं, देवी से समारोहारंभ की अनुमति ली

जाती है। देवी एक कांटों की सेज पर विरजमान होती

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा विशेष उल्लेखनीय है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुलहन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभा यात्रा का आनंद लेते हैं। इन द्रविड़ प्रदेशों में रावण-दहन का आयोजन नहीं किया जाता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लडिकयां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं रित्रयां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारंपरिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं, जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं।



विजय पर्व

दशहरे का उत्सव शक्ति और शक्ति का समन्वय बताने वाला उत्सव है। नवरात्रि के नौ दिन जगदम्बा की उपासना करके शक्तिशाली बना हुआ मनुष्य विजय प्राप्ति के लिए तत्पर रहता है। इस दृष्टि से दशहरे अर्थात विजय के लिए प्रस्थान का उत्सव का उत्सव आवश्यक भी है। भारतीय संस्कृति सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रुधिर में वीरता का प्रादुर्भाव हो कारण से ही दशहरे का उत्सव मनाया जाता है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आऋमण की प्रतीक्षा ना कर उस पर हमला कर उसका पराभव करना ही कुशल राजनीति है। भगवान राम के समय से यह दिन विजय प्रस्थान का प्रतीक निश्चित है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे। इस पर्व को भगवती के विजया नाम पर भी विजयादशमी कहते हैं। इस दिन भगवान रामचंद्र चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर अयोध्या पहुँचे थे। इसलिए भी इस पर्व को विजयादशमी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं। ऐसा माना गया है कि शत्रु पर विजय पाने के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं (महत्त्वपूर्ण पदों पर पदासीन लोग) को सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। दुर्योधन ने पांडवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के वनवास के साथ तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त दी थी। तेरहवें वर्ष यदि उनका पता लग जाता तो उन्हें पुनः बारह वर्ष का

वनवास भोगना पड़ता। इसी अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था तथा स्वयं वृहज्ञला वेश में राजा विराट के यहँ नौकरी कर ली थी। जब गोरक्षा के लिए विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न ने अर्जुन को अपने साथ लिया, तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। विजयादशमी के दिन भगवान रामचंद्रजी के लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने भगवान की विजय का उद्घोष किया था। विजयकाल में शमी पूजन इसीलिए होता है।

दिन हाथी पर बैठकर अपने महल से बाहर आते

थे और दशहरा मैदान में मां अपराजिता की पूजा

करते थे। राजाओं की परिपाटी समाप्त होने के

बाद आज वहां के राज्यपाल इस परंपरा का

निर्वहन करते हैं। इसी तरह, हिमाचल प्रदेश

स्थित कुलू का दशहरा भी बहुत प्रसिद्ध है। यहां

दशमी से अगले 15 दिन तक रोज वहां के

भूतपूर्व राजा या उनके वंश को कोई व्यक्ति

जनसभा में रावण दाह करके विजयदशमी का पुजन करता है। ऐसे ही सार्वजनिक उत्सव

बनारस और इलाहाबाद में भी होते हैं। बंगाल में

यह पूजन दुर्गा पूजा से ही जोड़ा जाता है। दुर्गा

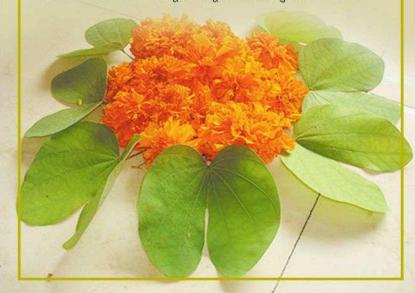
पूजा की महानवमी के बाद विजय दशमी के दिन

कोलकाता समेत सारे बंगाल में मंदिरों में पंडाल

सजते हैं और उत्सव मनाया जाता है। इसी दिन

विजयदशमी पर पूर्जे शमी वृक्ष

भारत में प्रत्येक चेतन व अचेतन को सम्मान देते हुए उनका पूजन भी किया जाता है। इनमें वृक्ष-वनस्पतियाँ भी सम्मिलित हैं। जिस तरह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर नीम, ज्येष्ठ पूर्णिमा वट सावित्री व्रत पर वट वृक्ष, सोमवती अमावस्या पर तुलसी, पीपल का, भाद्रमास की कुशग्रहिणी अमावस्या पर कुशा का और कार्तिक की आँवला नवमी पर आँवले के वृक्ष के पूजन का महत्व है, उसी प्रकार आश्वन शुक्ल दशमी (विजयदशमी) पर दो विशेष प्रकार की वनस्पतियों के पूजन का महत्व है। इनमें से एक है शमी वृक्ष, जिसका पूजन रावण दहन के बाद करके इसकी पत्तियों को स्वर्ण पत्तियों के रूप में एक-दूसरे को ससम्मान प्रदान किया जाता है। इस परंपरा में विजय उल्लास पर्व की कामना के साथ समृद्धि की कामना का रहस्य छुपा हुआ है। दूसरी वनस्पति है अपराजिता (विष्णु-क्रांता)। यह पौधा अपने नाम के अनुरूप ही पहचान देता है। यह विष्णु को प्रिय है और प्रत्येक परिस्थित में सहायक बनकर विजय प्रदान करने वाला है। नीले रंग के पुष्प का यह पौधा भारत में सुलभता से उपलब्ध है। घरों में समृद्धि के लिए तुलसी की भाँति इसकी नियमित सेवा की जाती है। आयुर्वेद के अनुसार यह पौधा कफ विकारों को दूर करते हुए मासिक धर्म संबंधी समस्याओं के अलावा प्रसव पीड़ा निवारण में भी महत्व रखता है। तंत्र शास्त्र में युद्ध अथवा मुकदमेबाजी के मामले में यह उपयोगी है। विजयदशमी को दुर्गा पूजन, अपराजिता पूजन, विजय प्रयाण, शमी पूजन तथा नवरात्र पारण के महान कर्म हैं। क्लाइटोरिसाटरनेटिया डालकुलम प्रजाति का यह पौधा भगवान राम युग के पहले से ही व्यवहार में स्थापित है और विद्वानों ने इसका बहुत महत्व बताया है। विजयदशमी को प्रात:काल अपराजिता लता का पूजन, अतिविशिष्ट पूजा-प्रार्थना के बाद विसर्जन और धारण आदि से महत्वपूर्ण कार्य पूरे होते हैं। ऐसी पुराणों में मान्यता हैं।



विजयदशमी अर्थात् अपराजिता पूजन करने के लिए शमी की

शक्ल पक्ष के नवरात्र संपन्न होने के उपरांत घास लेकर हिमालय में अर्तध्यान हो गईं और मनाया जाता है। शास्त्रों में दशहरे का असली आर्य व्रत के राजाओं ने इस विजय को उत्सव के नाम विजयदशमी है, जिसे अपराजिता पूजा भी रूप में मनाते हुए विजयदशमी पर्व का आरंभ कहते हैं। नवदुर्गाओं की माता अपराजितां संपूर्ण किया। उल्लेखनीय है कि उस वक्त विजयदशमी ब्रह्मांड की शक्तिदायिनी और ऊर्जा उत्सर्जेन देवताओं द्वारा दानवों पर विजय प्राप्त करने के करने वाली हैं। महर्षि वेद व्यास ने अपराजिता उपलक्ष्य में मनाई गई थी। इस युद्ध में देवताओं देवी को आदिकाल की श्रेष्ठ फल देने वाली, के साथ धरती के राजा दशरथ, जनक और शोणक ऋषि जैसे राजाओं ने भी अपना युद्ध देवताओं द्वारा पूजित और त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णू और महेश) द्वारा नित्य ध्यान में लाई जाने वाली देवी कहा है। गायत्री स्वरूप अपराजिता को निम्नलिखित मंत्र से भी पूजा जाता है -ओम् महादेव्यै च विह्माहे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात।। ओम नमः सर्व हिताथौयै जगदाधार साष्टांगोष्प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ।

सारागांध्रणां मस्त प्रवान मया कृतः । नमस्ते देवी देवेशि नमस्ते ईप्सित प्रदे। नमस्ते जगतां धातित्र नमस्ते शंकरप्रिये।। ओम् सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत। अतोष्ट्रं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम।। चारों युगों के आरंभ होने के समय से ही देवी अपराजिता के पूजन का भी आरंभ हुआ। कथा के अनुसार, देव-दानव युद्ध का काफी लंबा अंतराल बीत चुका था। नवदुर्गाओं ने दानवों के संपूर्ण वंश का नाश कर दिया। इसके बाद माता दुर्गा अपनी आदिशक्ति

विजयदशमी का पर्व हमारी संस्कृति से जुड़ा है। अपार भीड़ खींचने वाली यह सांस्कृतिक परंपरा असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है। इस दिन लोग अपने घर और बाहर उस विजयपर्व का आनंद उठाते हैं, जिसका आरंभ हजारों साल पहले हुआ था।

अत्याचारों से धरती फिर अशांत हो गई। धरती के जीवों को उनसे बचाने के लिए राम को वनवास पर जाना पड़ा। वैसे, राम ने अपने बाल्यकाल से ही आर्याव्रत पर घिरे हुए राक्षसों को एक-एक करके मारा। सबसे बडे राक्षस रावण को मारने के लिए उन्हें जो श्रम करना पड़ा, उसका उल्लेख रामायण में मिलता है। राम-रावण युद्ध नवरात्रों में हुआ। रावण की मृत्यु अष्टमी-नवमी के संधिकाल में और दाह संस्कार दशमी तिथि को हुआ। इसके बाद विजयदशमी मनाने का उद्देश्य रावण पर राम की जीत यानी असत्य पर सत्य की जीत हो गया। आज भी संपूर्ण रामायण की रामलीला नवरात्रों में ही खेली जाती है और दसवें दिन सायंकाल में रावण का पुतला जलाया जाता है। इस दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि दाह के समय भदा न हो। रामायण काल के बाद दशहरा मूलत- राजाओं यानि क्षत्रिय राजाओं का त्योहार माना गया। इसे राजाओं के विजय उत्सव के रूप में

आदिशक्ति दुर्गा सहित काली पूजन और अपराजिता पूजन की रस्म भी निभाई जाती है। कुल मिलाकर, विजयदशमी बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस विजय के लिए देवी मां अपराजिता अपनी अपार शक्ति ौशाल देखा जाने लगा। वे युद्ध में समय-समय पर शूरवीर दिखाया था। विजयी होकर उत्सव के राजाओं को प्रदान रूप में अपनी प्रजा के बीच करती रहती पहुंचते थे। मैसूर में वहां के में राम का राजा की सवारी राज्याभिषे क काफी प्रसिद्ध हुआ, लेकिन इसी रही है। दौरान रावण एवं अन्य दानवों के

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक सम्पादक कृष्णा टेकड़ीवाल द्वारा डिजिटल अखबार कंकड़बाग पटना से प्रकाशित। समाचार पत्र में किसी भी समाचार व लेख-आलेख पर सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्याय क्षेत्र पटना ही रहेगा। मोबाइल- 9801716267